RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

निम्न गौण विधाशाखाओं में समाजशास्त्र का विविध महत्व

डॉ. राजु पटेलीया

प्रस्तावना :–

शिक्षा के जगत में सामाजिक अनुसंधान मे इन विविध गौण विधाशाखाओं की यथार्थता के आधार पर आकां जाता है, दूसरी और सामाजिक अनुसंधान मे विविध विधाशाखाओं का महत्व उसकी उपयोगिता के आधार पर अंकित किया जाता है। इस विधाशाखाओं में समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वस्ती–विषयक पहलु और संस्थाओं के साथ संलग्न है। सैद्धांतिक रूप से देखा जाय तो समाजशास्त्र की विविध विधाशाखाओं के साथ विविध अध्ययनो से जुडा है। जिस मे समाजशास्त्रीय परिभाषाएँ और सिद्धांतों का समावेश होता है।

पारिवारिक समाजशास्त्र :–

परिवार सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक इकाई है। विश्व के ज्यादातर लोग पारिवारिक एकम में रहते हैं। समाजशास्त्रीय हावेट से देखें तो परिवार एक आदर्श प्रारूप (Approuch) है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्त्री की भूमिका परिवार में महत्त्वपूर्ण होती है। पारिवारिक अन्तःक्रिया, निकटवर्ती संबंध, सहनिवास, सहकार और भावना सदस्यों के बीच के आंतरसंबंध इत्यादि उसके केन्द्र में है। समाज में परिवार के कार्यात्मक पहलू के संदर्भ में यह अध्ययन विकासात्मक भूमिका अदा करता है।

रक्त संबंधों पर आधारित समाजशास्त्र :–

रक्त संबंध अर्थात् समान रक्त से परस्पर जुड़े हुए व्यक्तियों का समूह यह जीवित संबंधों के सांस्कृतिक अर्थघटन की पैदाइश है। रक्त संबंधों के सिवाय स्वीकृत सामाजिक संबंधों में स्त्री का समावेश होता है। जिसे आगे चलकर वंशानुक्रम के सिद्धांत के साथ जोड़ा जाता है।

नगर (शहरी) समाजशास्त्र :–

नगर समुदाय में नगरीय जीवनशैली का अध्ययन किया जाता है। व्यक्त जीवन जीने वाले परिवार के सदस्य स्त्री के साथ अनुकूलन स्थापित करते है। यहां पड़ोशी संबंध, मित्र समूह इत्यादि में ग्रामीण समुदाय से अलग प्रकार के संबंध है। स्त्री को शहर मे सामाजिकरण, शिक्षा, व्यक्तित्व–विकास के लिए जरूरी सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती है। इसलिए एक ग्रामीण वातावरण मे रही स्त्री और शहर या महानगर के वातावरण में स्त्री से अनेक बातों में अलग दिखाई देती है। इस प्रकार परिवार का अध्ययन नगरीय जीवनशैली के संदर्भ मे महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

सामाजिक मनोविज्ञान :–

सामाजिक मनोविज्ञान में भावनात्मक लगाव व्यक्त होता है। विवाह समाजजीवन का एक अभिन्न अंग है। परिवार ने स्त्री का संबंध प्रत्येक व्यक्ति के साथ विशेष होता है। यह कामचलाउ संबंध नहीं बल्कि टिकाऊ संबंध है। जिसमें भावनाओं का महत्त्व होता है। इस अध्ययन में देखा जाए तो सामाजिक रीति–रिवाजों को ज्यादा महत्त्व देने वाले परिवारों की संख्या ज्यादा है। ऐसे परिवारों के समक्ष सामाजिक समायोजन और अनेक प्रश्न तथा समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है।

साहित्य और समाजशास्त्र :–

इस समाजशास्त्र में गाँवों में से शहर में विविध समाज की स्त्रियों और पुरुषों का स्थानान्तरण होता रहा है, और हो रहा है। स्त्रियों और पुरुषों के अनुभव से हमें गाँव और शहर की संस्कृति मे रही भिन्नता का आसानी से पता चल सकता है।

बस्ती विषयक समाजशास्त्र :–

बस्तीशास्त्र की दृष्टि को देखें तो परिवार का स्वरूप, सदस्यों की संख्या, स्त्री–पुरुष तथा बच्चों की संख्या, पीढ़ियों की संख्या इत्यादि जानन के लिए यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। परिवार मे स्त्री के रूप में स्वतंत्र पारिवारिक निर्णय लेना परिवार के सदस्यों की सहमति पर बस्तीशास्त्र प्रभाव डालता है।

स्त्रियों का समाजशास्त्र तथा लिंग अध्ययन :–

विवाह के बाद स्त्रियों के लिए मातृत्व धारण करना, समाज के लिए अपेक्षित है। परंतु जब स्त्री अपने निश्चित समय मातृत्व धारण नहीं कर सकती तो उसे लोगों से बूरी–भली अनेक बातों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसके स्थान का प्रश्न भी उत्पन्न होता है। लेकिन आज शहरी शिक्षित लोगों की विचारशैली में परिवर्तन आया है। लड़का हो या लड़की दोनों का समान ही पालन–पोषण किया जाता है। इस तरह लड़की को जन्म लेने का, जीवन जीने का, समान रूप से विकास करने का मार्ग यहाँ मिलता है। लड़की को जन्म देने वाली माता का स्थान भी स्वीकृत सामाजिक घटना बन गई है।

क्रियात्मक समाजशास्त्र :–

समाजशास्त्र मे मनुष्य की क्रियाओं तथा अंतःक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। समाज में परिवार विहिन स्त्रियों के लिए तथा उनके जीवन उत्कर्ष के लिए विविध संस्थाएँ और आश्रम कार्यरत है। इन संस्थाओं की मदद से स्त्रियाँ समाज के साथ अपना सामंजस्य स्थापित कर अपना भविष्य उज्जवल बना सकती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विवाह संस्था के संदर्भ में :–

विवाह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। रीत–रिवाज और कानून की दृष्टि से इस संबंध को पारिभाषित किया गया है। विवाह संबंध में जातीय जीवन से सम्बन्धित वर्णनात्मक नियमो को सहमती दी गई है। जन्म लेने वाला बच्चा लड़का है या लड़की उसकी स्वीकृति परिवार मे सबसे महत्त्व की है। आज लड़के–लड़की के बीच का अन्तर नगणीय है। विवाह के बाद स्त्री पिहर तथा ससुराल के बीच अच्छा संतुलन बनाएँ रखती है। इस अध्ययन विवाह के उद्देश्य करने में महत्त्वपूर्ण उपयोगी साबित होगा।

मानव अधिकार और कानून :–

स्त्री का जन्म, स्त्री से सम्बन्धित अधिकारों का उपयोग, स्त्री की स्वतंत्रता यह सभी मानवाधिकार के भागरूप है। स्त्री का मत देने का अधिकार, पारिवारिक संपत्ति मे अधिकार, कानूनी माना जा रहा है। सार्वजनिक समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्वतंत्र रूप से भाग लेना तथा आर्थिक उपार्जन के निवारण की चर्चा की गई है। परिवार के अस्तित्व व सातत्व के प्रश्न के निवाहण में स्त्री की भूमिका बहुत महत्त्व की है, साथ ही विवाह पश्चात जातीय जीवन में उपस्थित असंतोष, अतृप्ति या संपूर्णता की कमी की परिस्थिति दाम्पत्य जीवन में अनेकों प्रश्न उपस्थित करती है।

इसका निवारण कर परिवार की भावनाओं, ईच्छाओं को पूरा करने में कार्यात्मक भूमिका अदा करती है। इस प्रकार विविध समस्याओं तथा उनके निवारण के लिए उत्पन्न परिस्थिति की समझ इस प्रकार के अध्ययनों से मिलती है।

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में :–

इस अध्ययन में बदलते हुए पारिवारिक मूल्य, विवाह के उद्देश्य समाज में स्त्री के स्थान मे आये परिवर्तन, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक परिवर्तन इत्यादि मे शिक्षा तथा वातावरण की भूमिका कैसी होती है। यह समझने में उपयोगी साबित होगा। स्त्री के शारीरिक, मानसिक लगाव विषयक संबंधों के सकारात्मक तथा नकारात्मक पहलू के संदर्भ में समझने में यह अध्ययन उपयोगी है।

धर्म का समाजशास्त्र :–

धर्म की दृष्टि से देखें तो प्रस्तुत अध्ययन में परिवार, समाज के प्रति ऋण तथा अधिकार व कर्तव्य इत्यादि का अध्ययन किया गया है। व्यक्ति के लिए परिवार, समाज, धर्म, समाज के सातत्य के लिए विवाह करना जरूरी है, तभी पति–पत्नी मिलकर पितृऋण, मातृऋण, ऋषिऋण, राज्य और देश का सातत्य बनाए रखने का ऋण अदा करते है।

सामाजिक समस्याओं का समाजशास्त्र :–

समाज के ज्यादातर लोग जब अनिच्छनीय परिस्थिति का शिकार बनते है ता उसे सामाजिक समस्या कहते है। जिसमें निवारण के लिए कुछ कर सकते हैं, ऐसा लोगो का मानना है और उसके लिए सामूहिक प्रयत्न भी करते है। समाज में समझ के ढाँचे से सम्बन्धित अनेक बहलुओं पर विचार किया जाता है।

समापन :–

समाजशास्त्र के सैद्धांतिक पहलु के साथ व्यावहारिक रूप से देखे तो सामाजिक संस्थाओं का अनेक अनुभव, प्रेरणा, प्रोत्साहन, कार्यात्मक तथा विकासात्मक प्रभावों, प्रश्नों, समाज द्वारा प्राप्त स्वीकृति तथा अस्वीकृति, आर्थिक खर्च, स्त्री–पुरुष का सामाजिकरण, पोलिसी मे आये बदलाव इत्यादि अनेक पहलुओं को प्रभावित करता है।

संदर्भ :–

१. डॉ. अनिल कुमार (२०११) ''रिसर्च मैथ्डोलोजी तर्क एवं विधियाँ'', आर्या पब्लिकेशन, दिल्ली
२. डॉ. मुंजल एस. (२००१) ''रिसर्च मैथोडोलोजी'', राज पब्लिर्सिंग हाऊस, जयपुर
३. डॉ. प्रसाद गोविन्द (२००७) ''सामाजिक परिवर्तन'', डिस्कवरी पब्लिर्सिंग हाऊस, नइं दिल्ली
४. डॉ. महाजन संजीव (२०१०) ''परिवार का समाजशास्त्र'', अजुन पब्लिर्शिंग हाऊस, दिल्ली
५. अग्रवाल शिवशंकर (२०११) ''सामाजिक अनुसंधान, सर्वेक्षण एवं साख्यिकि'', रितु पब्लिकेशन, जयपुर

RRIJM 2015, All Rights Reserved